फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के ज़रियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 164 फरवरी 2002

कहत कबीर

हर राजसत्ता की आतंकवाद की आवश्यकता बढ रही है। अपने होने को जायज ठहराने के वास्ते सरकारों के लिये आतंकवाद अधिकाधिक जरूरी है।

बातें ... ज्यादा बातें ... लेकिन कौनसी बातें ? (2)

पिताजी की कूल्हे पर से हड्डी टूट गई। हम चार भाई उनके इलाज के लिये भाग- दौड़ करने लगे तो लोग बोले कि बुजुर्ग हैं, इनके लिये इतना परेशान मत हो। हमें लोगों की यह बातें बुरी लगी। हमारे पिताजी थे, हमें पाला- पोसा था, हमें स्नेह- प्यार दिया था — बूढे हो गये तो उन्हें भूल जायें ?

बस से सम्भव नहीं था, हम ने जीप की। गाँव से छपरा ले गये, पटना ले गये। हमारी पत्नियों द्वारा नाक- भौं सिकोड़ने पर हम ने टट्टी- पेशाब साफ किये। बत्तीस हजार रुप्ये खर्च हुये। हड्डी जुड़ गई, पिताजी चलने- फिरने लगे।

हम तीन भाई फिर कारखानों में खटने लगे और एक गाँव में रहा। ज्यादातर फैक्ट्रियों में 8 घण्टे के महीने में 1200 रुपये देते हैं और रोज 12 घण्टे काम नही करो तो गुजारा नहीं। तनखा महीने की बजाय दो महीने में जा कर देते हैं। पेट काट कर हम जो मनी आर्डर भेजते हैं वह पहुँचने में चार महीने लगा देते हैं। परिवारवाले सोचते हैं कि नौकरी में हम गुलछर्रे उड़ाते हैं।

पिताजी की उपेक्षा हुई। उनके साथ अनादरपूर्ण व्यवहार हुआ। गुस्से में एक दिन पिताजी खेत में गये और वहाँ मिट्टी का तेल छिड़क कर आत्महत्या कर ली।

" क्या फायदा ?" वाले सम्बन्ध , दुकानदारी वाले रिश्ते , मण्डी जनित आचार-विचार . . . गोरा अन्धेरा ...

बच्चों के बारे में, बुजुर्गों के बारे में चर्चा करते हों चाहे स्वयं के बारे में, मण्डी की भाषा हमारी बोलचाल में सरक आती है। आज दुर्गत की जननी मण्डी है और यह अक्सर होता है कि दिल से जिनका भला चाहते हैं उन्हें हम मण्डी की दलदल में हाथ- पैर मारने की सलाह देते हैं। नेक कर रहे हैं की धारणा लिये बुरा करने की त्रासदी बहुत ही व्यापक है। बच्चों का भविष्य बनाने के नाम पर वर्तमान व्यवस्था की पोषक बातें घर- घर में होती हैं। हम पीड़ितों के अन्दर तक धँसी है मण्डी की पैनी छुरी। इस जहर की काट बाहर मण्डी से निपटने जितनी ही महत्वपूर्ण है — बल्कि, अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि मण्डी के सफलता के पैमानों के विपरीत जीवन की सफलता के पैमानों की रचना के बिना मण्डी से पार नहीं पाया जा सकता।

इन्सान की " वैल्यू "

बहुत सामान्य हो गया है एक तरफ यह कहना कि आज इन्सान की वैल्यू नहीं है और दूसरी तरफ परिचय देते समय व्यक्ति का भाव- मोल दर्शाना। यह मनुष्य के मण्डी में माल बन जाने की अभिव्यक्ति है। और, यह हम सब के दो कौड़ी के हो जाने का ही परिणाम है कि व्यक्ति की विशेषताओं का महिमामण्डन फूहड़ता के नित नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

दरअसल, ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में वास्तविकता के स्थान पर छवि का बोलबाला होता है। छवि के लिये सामान्य की बजाय अति की आवश्यकता होती है, रोजमर्रा के स्थान पर घटना की जरूरत होती है। स्वामी राम, स्वामी रावण, सम्राट अशोक, बादशाह अकबर के किस्से- कहानियाँ प्रचारित- प्रसारित हैं जबकि दासों, भूदासों की बातें बहुत ढूँढने पर भी छिट- पुट ही मिलेंगी।

समानता की, बराबरी की दुहाई देती मण्डी व्यवस्था वास्तव में ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं की पराकाष्ठा है। कम्पनियों- संस्थाओं के रूप में आज चेहराविहीन अवस्था में पहुँची मण्डी व्यवस्था में चेहरों की चाह ने हवस का रूप अख्तियार कर लिया है। " कुछ कर दिखाना " मूलमन्त्र- सा बन गया है। नेता- अभिनेत्री- खिलाड़ी- कलाकार- अधिकारी- डायरेक्टर- चीफ बनने की सार्विक- सी चाह प्रत्येक द्वारा स्वयं के तन- मन के साथ अत्याचार करना लिये है। और, मीडिया द्वारा प्रचारित विशेष व्यक्तियों के हाव- भाव व मोल- तोल की जुगाली करना हमारी दैनिक क्रियाओं में घुल- मिल गया है। इन्सान की " वैल्यू " के स्थान पर इन्सानियत पर विचार- चर्चा हमें अपने इन नासूरों को पहचानने में मदद करेगी। छवि- प्रपंच से छुटकारे के प्रयास मानवीय व्यवहार की राह पर कदम हैं।

भविष्य बनाना

कौन है जो यह नहीं जानती कि मण्डी में प्रतियोगिता अनन्त है? कौन है जो यह नहीं जानता कि मण्डी में भाव बदलते रहते हैं? कौन नहीं जानती कि असुरक्षा मण्डी की जीवन- क्रिया है ?

सतही, दिखावटी, क्षणिक और इस्तेमाल- उपयोग वाले सम्बन्ध मण्डी के चरित्र में हैं। इन्सानों के बीच ऐसे रिश्तों के लिये प्रयासों को " भविष्य बनाना " कहना उचित है क्या ?

आइये बच्चों से शुरू करें।

"अच्छे" विद्यालय, महँगी शिक्षा, स्कूल के बाद ट्युशन — यह सब बच्चे के मण्डी में भाव बढाने के लिये प्रयास हैं। अपना पेट काटने और बच्चों की दुर्गत करने को उनका भविष्य बनाने के नाम पर जायज ठहराया जाता है। बच्चों के लिये ही सही, क्या इस पर पुनः सोचना- विचारना जरूरी नहीं है ?

मजबूरी का रोना रोने की बजाय स्कूल पर प्रश्न उठाना हमें आवश्यक लगता है। यह मण्डी पर सवाल उठाने का अंग है। पीढियों के बीच सहज सम्बन्धों और समुदाय- समाज में बच्चों के पलने- बढने की आवश्यकता के लिये व्यवहार दस्तक दे रहा है — सोचिये, विचारिये, बातें कीजिये क्योंकि इस तन्दूर में हम सब भुन रहे हैं।

कुछ फुरसत में

यामाहा मजदूर : " कम्पनी द्वारा कई बार वी.आर.एस. के जाल बिछाने के बावजूद फरीदाबाद प्लान्ट में ज्यादा वरकर इसके फेर में नहीं आये। हड़ताल- रूपी धमाके से छँटनी करने की कम्पनी की योजना को भी हम ने सिरे नहीं चढने दिया। ऐसे में मैनेजमेन्ट के हाथ फरीदाबाद से सूरजपुर ट्रान्सफर करना ही रहा। पहले स्थानान्तरित किये 104 में दिसम्बर में 177 की सँख्या जोड़ दी गई तथा 250 और को भेजने की चर्चा है। (बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

आदान - प्रदान खतों - पत्रों से

★ .... बातें वे हों जिनसे समस्याओं के हल निकलें या घडी - दो घड़ी को चैन मिले । जहर बुझी बातों से तो हम सिर्फ दूसरों को दुःखी करते हैं या नीचा ही दिखाते हैं । सकारात्मक सोच से प्रेरित बातें ही सार्थक होती हैं , इससे इतर निरर्थक हैं ।

जगह - जगह के मजदूरों पर होने वाले अत्याचार , शोषण की खबरें पढ़ कर मन खौलता है ।....

16.1.02 — बाबू लाल , मन्दसौर

★ जागकर भी सो रहे हैं जो सयाने हैं यहाँ ,
इसलिये ही प्रश्न चुप हैं उत्तरों के सामने ।

21.1.02 — राजेन्द्र , लखनऊ

★ .... आज की परिस्थिति उस वृक्ष का फल है जिसको सब सींच रहे हैं । जीवन - मूल्यों की वह मान्यता छाई है जिसे गरीब , अमीर . ... बेवकूफ , बुद्धिमान .... स्त्री , पुरुष .... सन्त , महात्मा .... सभी की मान्यता और स्वीकृति प्राप्त है । अतः वर्तमान परिस्थिति के विकल्प की बात सोचते समय इस पर विचार करना आवश्यक है कि जिस परिस्थिति को हम दर्दनाक और भयंकर समझ रहे हैं तथा बरदाश्त की सीमा के बाहर महसूस कर रहे हैं , वह परिस्थिति किसका फल है ? एक बात और समझने की है , जिस परिस्थिति को हम भयावनी बता रहे हैं , अभी तो वह सब स्टेटस सिम्बल बनी हुई है । इसी परिस्थिति को प्राप्त करने की दौड़ सारे संसार में चल रही है । कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य समाज की मान्यता और आकांक्षा इस परिस्थिति को प्राप्त करने की ओर चल रही है ।

सारे संसार ने विकास और प्रगति की एक परिभाषा बनाई है । कहा गया है —

जिस देश में प्रति व्यक्ति बिजली , पानी , पैट्रोल , कपड़ा , कागज , चीनी , लोहा , लकड़ी , आदि भोग सामग्री जितनी अधिक खर्च होती है वह उतना ही प्रगतिशील देश है । इसी आधार पर सारी दुनिया को पहले , दूसरे ,तीसरे , विकासशील और अविकसित देश की श्रेणियों में बाँटा हुआ है ।

इस परिभाषा ने हर व्यक्ति , हर समुदाय और हर देश को अधिक से अधिक भोग सामग्री पर एकाधिकार स्थापित करने की प्रेरणा दी है । भोगवादी जीवन—मूल्यों की मान्यताओं के इस विष - वृक्ष के फलों के रूप में वर्तमान परिस्थिति को जन्म मिला है । भोगवादी जीवन - मूल्यों की मान्यता ने सजीव श्रम को संचित श्रम में बदलने की कला का विकास भी किया है । इस कला के सभी पक्षधर हैं । जिनको यह कला सध गई है उनको समाज सामर्थ्यवान , प्रतिष्ठित और अग्रणी मान कर सम्मान देता है । अभिनेता , विश्वसुन्दरी , क्रिकेट प्लेयर आदि सम्मानित किये जाते हैं । कारीगर , श्रमिक , कृषक आदि बुनियादी जीवित श्रम करने वालों को छोटा माना जाता है । ये छोटा माना जाने वाला समुदाय भी अपने जीवित श्रम का महत्व नहीं समझता क्योंकि वह अपनी सन्तान को इस योग्य बनाने का प्रयत्न करता है कि जीवित श्रम करने वालों की अगली पीढी संचित श्रम की अधिकारिणी बन जावे ।

इस परिस्थिति में विकल्प की तलाश करने वाले भी इस तलाश के नाम पर संचित श्रम के अधिकारी बनने का सपना देखते पाये गये हैं । विकल्प की तलाश का पुरुषार्थ भी संचित श्रम का पोषक बन कर रह जाता है क्योंकि परिस्थिति के कारण स्वरूप विष - वृक्ष को नष्ट करने की तलाश नहीं है ।

विकल्प तलाश करने वालों को प्रगति और विकास की परिभाषा बदलनी होगी । वर्तमान में ... प्रकृति और जीवित श्रम के साथ बलात्कार करके भोग साधनों पर एकाधिकार हेतु बाजार व प्रचार तन्त्र पर आधारित और केन्द्रिय प्रशासनिक तन्त्र से संरक्षित व्यवस्था प्रगति व विकास का प्रतीक है । .... मानवीय आधार पर व्यक्ति , समाज और प्रकृति के सन्तुलन की जीवन - शैली को स्थापित करने का पुरुषार्थ करना होगा ।....

12.1.02 — मुक्तानन्द सरस्वती , देहरादून

मजदूरो

तुम कमाओ
हम खायें
तुम्हारे बच्चे कमायें
हमारे बच्चे खायें
'समाजवाद' का यह
सीधा सच्चा सूत्र
बाँध लो गिरह से ।
नाले छोटी नदियों में
छोटी नदियाँ
बड़ी नदियों में
और बड़ी नदियाँ
समुद्र में जा कर
गिरती हैं
लेकिन समुद्र
कहीं नहीं जाता
अटल , वहीं
खड़ा रहता है
और नदी - नालों के
श्रम को
गंभीर गर्जना के साथ
डकारता हुआ
कहता है —
" श्रम की जय हो !
श्रम एवं जयते !! "

— आनन्द , बालाघाट

★ ... कारखाना वह जगह है जहाँ माता लक्ष्मी गुलाम होती है , उसके बेटे असहाय दिनरात पशुओं की तरह खटते रहते हैं , गुलामी करते हैं । रावणराज यही तो नहीं ?

14.1.02 — उमेश ' रवि ' , बक्सर

★ ... फरीदाबाद हो अथवा देश का कोई भी भूभाग , हर जगह मजदूर हैं । हर जगह के मजदूरों की कुछ ऐसी विषम समस्यायें हैं जिनका समाधान सरकारी कागज तो कर ही नहीं सकता है । रिश्वतखोर दलाल किस्म के मजदूर यूनियनों के नेताओं से भी यह काम नहीं हो सकता । मजदूरों को खुद हर तरह की जोखिम उठाकर विवश , लाचार मजदूरों - गरीबों का शोषण करने वाली पूँजीवादी आसुरी व्यवस्था के खिलाफ आगे आना होगा....

24.1.02 — बृजेन्द्र सिंह बैरागी , बलिया

★ 16.11. 2001 को बल्लभगढ पोस्ट आफिस से मैंने अपने घर **मनी आर्डर** भेजा । एक महीने तक पैसे नहीं पहुँचे तो मैंने डाकखाने में शिकायत की । दस दिन बाद पूछने गया तो बल्लभगढ पोस्ट आफिस वाले बोले कि मेरी शिकायत मुख्य डाकघर भेज दी है । मैं बड़े डाकखाने गया तो वहाँ बोले कि मेरी शिकायत पहुँची नहीं है और कि मैं दूसरी शिकायत लिख दूँ । मैंने फिर शिकायत लिख कर दे दी । आज 16.1.2002 को मैं बड़े डाकखाने गया तो वहाँ बोले कि कम्प्युटर में अभी मेरी शिकायत दर्ज नहीं हुई है । मैंने आपत्ति की तो मैडम बोली कि फाइलों में इतने कागज हैं , इन्हें कौन छाँटे , फिर आना । मेरी ही तरह के 50 - 60 लोग वहाँ घण्टों से परेशान थे । किसी को मनी आर्डर भेजे 3 महीने हो गये थे , किसी को 6 महीने और एक का तो साल पूरा होने वाला है पर पैसे पहुँचे नहीं ।

16.1.02 — विनोद कुमार

कुछ फुरसत में यामाहा मजदूर ....(पेज एक का शेष)

" सूरजपुर में कैजुअल लेबल लगा कर दस - दस साल से जिन वरकरों से कम्पनी काम करवा रही थी उन्हें निकालना शुरू कर दिया है । मानिंद लोगों , मिनिस्टिर लेवल की सिफारिशों से लगे और परमानेन्ट की तुलना में एक चौथाई वेतन तथा डेढ गुणा कार्य करते कई वरकरों द्वारा यामाहा कम्पनी के खिलाफ कदम उठाने की चर्चा सूरजपुर प्लान्ट में है ।

" कम्पनी किसी की नहीं होती वाली बात फिर सामने आई है । यामाहा मैनेजमेन्ट ने फरीदाबाद प्लान्ट में 53 सुपरवाइजरों को धमकी दी कि 31 दिसम्बर तक इस्तीफे दो या फिर मशीनें चलानी पड़ेंगी । सुना है कि 23 ही कम्पनी के झाँसे में आये और 30 सुपरवाइजरों ने इस्तीफे देने से इनकार कर दिया है ।

" फरीदाबाद से सूरजपुर भेजे हम लोगों के लिये समाज अटेन्ड करना मुश्किल हो गया है । सुबह छह - सवा छह बजे बस में बैठना शुरू करते हैं और शाम सवा छह - साढे छह बजे उतरते हैं । बदरपुर में लगते जाम में फँस गये तो और देर हो जाती है । अधिक थकावट तो होती ही है , हर रोज 3 - 4 घण्टे अधिक समय भी हमारा लगता है । लेकिन इस सब के लिये यामाहा कम्पनी हमें कोई क्षतिपूर्ति नहीं देती । उल्टे , बस के लिये 60 रुपये महीना हमारे वेतन में से कम्पनी काट लेती है ।" ■

सड़कें कत्लगाह हैं।

**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद**—121001

कानून-कानून-....

हाई टेक सस्पेन्शन मजदूर : " 16/2 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं , फण्ड की पर्ची नहीं । हैल्परों को कम्पनी 1400 रुपये महीना तनखा देती है ।"

अंजीरा उद्योग वरकर : " सैक्टर—58 स्थित फैक्ट्री में 17-18 तारीख को जा कर तनखा देते हैं । हैल्परों को 1300 रुपये महीना देते हैं और ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं ।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "हड़ताल के बाद कम्पनी ने थोक में कैजुअल वरकर भर्ती किये हैं । हमें ओवर टाइम काम के पैसे मैनेजमेन्ट सिंगल रेट से देती है, पैसे भी महीने के महीने नहीं बल्कि नौकरी से निकालते हैं तब देते हैं । सामान्य ड्युटी के दिनों हमें 7 रुपये कैन्टीन के देते हैं पर रविवार को ओवर टाइम के दिन यह 7 रुपये भी नहीं देते ।"

नूकेम वरकर : " कोई सीमा नहीं है । मई 2001 से नूकेम मशीन टूल्स लिमिटेड के हम मजदूरों को तनखायें नहीं दी हैं । सरकार से शिकायतें कर-कर हम थक गये हैं । क्या करें?"

लवेस्का टैक्सटाइल्स मजदूर : "प्लॉट 74 डी.एल.एफ. एरिया स्थित फैक्ट्री में रोज 12 घण्टे की ड्युटी है । हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं, पी.एफ. की पर्ची भी नहीं । हैल्परों को रोज 12 घण्टे कार्य के बदले 1800 रुपये महीना देते हैं ।"

हेल्ला (जे एम ए) वरकर : " परमानेन्ट मजदूरों को तनखा 7 जनवरी को दे दी लेकिन हम कैजुअल वरकरों को दिसम्बर का वेतन आज 15 जनवरी तक नहीं दिया है ।"

खण्डेलवाल प्रा. लि. मजदूर : "प्लॉट 68 सैक्टर—6 स्थित फैक्ट्री में 40 वरकर काम करते हैं पर कागजों में 7 को ही दिखाया है — 33 मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं ।"

न्यू एलनबरी वरकर : " परमानेन्टों को कम्पनी जबरदस्ती निकाल रही है — परमानेन्ट मजदूर अब 200 ही रह गये हैं और ठेकेदारों के जरिये 400 वरकर रख लिये हैं । जुलाई 2001 में आया डी.ए. हमें नहीं दिया है । स्टाफ को दिसम्बर की तनखा आज 15 जनवरी तक नहीं दी है ।"

आटोपिन मजदूर : " कम्पनी ने हर वरकर पर एक स्टाफ रखा है — 90-95 हम परमानेन्ट मजदूर हैं और 90-95 लोग ही स्टाफ में हैं । स्टाफ को समय पर तनखा देते हैं पर हम परमानेन्ट मजदूरों को नवम्बर और दिसम्बर की तनखायें आज 31 जनवरी तक नहीं दी हैं , कैजुअलों का तो और बुरा हाल है । अप्रेन्टिसों को भत्ता नहीं दिया है और सिखाने की बजाय उत्पादन में झोंक देते हैं ।"

भोगल्स शूज वरकर : "दिसम्बर की तनखा आज 15 जनवरी तक हमें नहीं दी है ।"

एस.पी.एल. मजदूर : " मथुरा रोड़ स्थित स्वेटर डिविजन में 1500 में से 1200 वरकर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं । हमें धमकाने के लिये ठेकेदारों ने लफँगे रखे हैं । कई ठेकेदार 8 घण्टे काम के 50 रुपये बताते हैं और हर महीने उन पैसों में से भी 200-300 रुपये काट लेते हैं ।"

भास्कर रिफ्रेक्ट्रीज मजदूर : " 7 तारीख से पहले तो कम्पनी कभी वेतन देती ही नहीं । ऐसा है : 15 को तनखा देने के बारे में सोचते हैं , 20 को निर्णय करते हैं और 28-30 तारीख को जा कर पैसे देते हैं । आज तो 12 जनवरी ही हुई है अभी दिसम्बर का वेतन कहाँ !" ■

बातें यह भी

मेहरा मैटल मजदूर : " सैक्टर—59 स्थित फैक्ट्री में बोनस नहीं देने की शिकायत श्रम विभाग में किसी ने की । इस पर मैनेजमेन्ट ने 8.33 प्रतिशत बोनस की राशि पर प्रत्येक मजदूर से हस्ताक्षर करवा लिये लेकिन किसी भी वरकर को एक पैसा तक नहीं दिया ।"

हिन्दुस्तान सिल्क मिल वरकर : " प्लॉट 157 सैक्टर—24 स्थित फैक्ट्री में हेरा-फेरी द्वारा कम्पनी कम वेतन पर प्रोविडेन्ट फण्ड जमा करवाती है । ठेकेदार के जरिये रखे 35 वरकरों से रोज 11 घण्टे काम करवाते हैं और इन मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं ।"

मेल्को प्रिसिजन मजदूर : " प्लॉट 4 सैक्टर—27 ए स्थित कम्पनी ने मेल्को इन्टरनेशनल नाम से नई फैक्ट्री खोली है और कम्पनी को घाटा हुआ कह कर 8.33 प्रतिशत बोनस की बात करते हैं जबकि पिछले वर्ष बोनस 20 प्रतिशत था । दिसम्बर की तनखा हमें 17 जनवरी को जा कर दी । कैजुअलों को 1500 रुपये महीना ही देते हैं और ई.एस.आई. कार्ड नहीं, फण्ड की पर्ची नहीं ।"

पूजा फोर्ज वरकर : " 1/41 डी एल एफ एरिया स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे प्रतिदिन काम करवाते हैं । दस घण्टे तो कम्पनी ड्युटी के बताती है और 2 घण्टे ओवर टाइम के (पेमेन्ट सिंगल रेट से) । कम्पनी हर साल हम से नया फार्म भरवाती है और पुराने को जला देती है ।"

पँजाब रोलिंग मिल मजदूर : " प्लॉट 49-50 सैक्टर—24 स्थित फैक्ट्री में ब्रेक किसी का नहीं करते , बस हर साल दिवाली पर इस्तीफे लिखवा लेते हैं । दिहाड़ी 50-60-65-70 रुपये के हिसाब से 1500-1800 रुपये तनखा बताते हैं और इन में से भी 4 साप्ताहिक छुट्टियों के पैसे काट लेते हैं ।"

मितासो एप्लाइन्सेज वरकर : "प्लॉट 102 सैक्टर—24 स्थित फैक्ट्री में पहले एक मशीन पर एक आपरेटर और दो हैल्पर थे । फिर मैनेजमेन्ट ने एक आपरेटर के साथ एक हैल्पर निर्धारित किया । अब कम्पनी ने तीन आपरेटरों के बीच एक हैल्पर कर दिया है । पानी-पेशाब तक की परेशानी तो हमें हुई ही है, पावर प्रेसों पर एक्सीडेन्ट के खतरे तो इससे खासकरके बढ गये हैं ।"

कोहिनूर रबड़ मजदूर : " फैक्ट्री गेट पर हर समय ' भर्ती ' लिखा रहता है । दरअसल , 10-15 दिन काम करवा कर वरकरों को भगा देते हैं , पैसे नहीं देते ।" ■

एस्कोर्ट्स

कैजुअल वरकर : " एस्कोर्ट्स कम्पनी हम से मशीनें चलवाती है लेकिन वेतन हमें हैल्पर का देती है । डरा-धमका कर साहब लोग जल्दी-जल्दी हम से एक मशीन का निर्धारित उत्पादन करवा लेने के बाद हमें दूसरी मशीन पर लगा देते हैं । ऐसे में एक्सीडेन्ट का खतरा बहुत रहता है । **एक्सीडेन्ट होने पर एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती । बल्कि , चोट लगने पर वरकर की गैरहाजरी लगा देती है ।** फार्मट्रैक प्लान्ट में 13 दिसम्बर को ड्रिल मशीन चला रहे एक कैजुअल वरकर का हाथ मशीन में फँस कर तीन जगह से बुरी तरह टूट गया । तत्काल मैनेजमेन्ट उसे एस्कोर्ट्स मेडिकल सेन्टर ले गई और वहाँ इलाज करवाया । एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी और कम्प्युटर में फेर-बदल कर घायल मजदूर की अनुपस्थिति लगा दी । फैक्ट्री में कार्य करते समय तीन जगह से हाथ तुड़वा बैठे मजदूर को एस्कोर्ट्स कम्पनी ने मुआवजे में एक रुपया नहीं दिया है और एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी इसलिये ई.एस.आई. से वह मजदूर मुआवजा ले नहीं सकता । हाँ , बिलों का भुगतान किये बिना उसे एस्कोर्ट्स मेडिकल सेन्टर से बाहर जाने दिया । पीड़ित मजदूर ने एस्कोर्ट्स कम्पनी के खिलाफ ई.एस.आई. अधिकारियों को शिकायत की है ।" ■

मण्डी-मण्डी

नोर्थ वैस्ट स्विचगियर मजदूर : " फैक्ट्री में काम नहीं है । कम्पनी सप्ताह में हमारी तीन दिन छुट्टी कर रही है । नौकरी पर खतरा है ।"

आटोलैम्प वरकर : " काम बहुत ही कम है, फैक्ट्री में जा कर बैठे रहते हैं । "

क्लच आटो मजदूर : " काम ढीला है । अब कम्पनी उपस्थिति पर जोर नहीं देती — नवम्बर का अटेन्डेन्स अलाउन्स भी नहीं दिया । तीन-चार महीने पहले किये ओवर टाइम काम के पैसे नहीं दिये हैं । नवम्बर की तनखा किस्तों में 25-26 दिसम्बर तक दी । दिसम्बर का वेतन आज 12 जनवरी तक नहीं दिया है ।"

अमेटीप मशीन टूल्स वरकर : "नौकरी क्लेश है । आजकल उत्पादन की माँग नहीं होने से हम काफी परेशान हैं । दिसम्बर की तनखा हमें आज 15 जनवरी तक नहीं दी है । कम्पनी हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड जमा नहीं कर रही । वर्दी-जूते और एल टी ए भी मैनेजमेन्ट ने रोक रखे हैं ।"

एस्कोर्ट्स क्लास मजदूर : "एग्रीमेन्ट द्वारा वर्क लोड में तो भारी वृद्धि कम्पनी ने कर दी पर इधर मण्डी में माँग ही नहीं है । मैनेजमेन्ट हफ्ते में तीन दिन छुट्टी करने लगी है ।"

रोलाटेनर्स वरकर : " 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं । ओवर टाइम कह कर रविवार को भी 12-12 घण्टे की शिफ्ट । रोलाटेनर्स में कभी भी छुट्टी नहीं होती । फैक्ट्री से छूटते हैं तब शरीर बेहाल होता है ।" ■

धुन्ध दोफाड़

2 जनवरी को फरीदाबाद में रेलवे ट्रैक 2 घण्टे जाम रहा। इसका कारण धुन्ध नहीं थी। बल्कि, मण्डी की धुन्ध के कारण ड्राइवरों की सँख्या में भारी कमी की वजह से रेल लाइन बन्द रही।

12 घण्टे से ड्युटी कर रहे मालगाड़ी चालक सुरेश कुमार ने ग्रीन सिग्नल के बावजूद गाड़ी नहीं चलाई। चार घण्टे और गाड़ी चलाने के लिये रेलवे प्रशासन के दबाव के सामने झुकने से ड्राइवर सुरेश कुमार ने इनकार कर दिया।

रेल विभाग के अपने सुरक्षा नियम रनिंग स्टाफ को 8 घण्टे की ड्युटी के बाद 16 घण्टे का ब्रेक देना जरूरी बताते हैं। लेकिन स्टाफ की कमी और अपने लक्ष्य को पूरा करने के चक्कर में रेल प्रशासन चालकों से 8 घण्टे की बजाय 16 से 20 घण्टे तक काम ले रहा है। ड्राइवर की अधिक ड्युटी की वजह से हुई फरीदाबाद, राजपुरा और गैसाल रेल दुर्घटनाओं को ज्यादा समय नहीं हुआ है।

झाँसी रेल मण्डल के आगरा शेड में रेलवे के अपने नियमों के अनुसार 129 चालक तथा 129 सहायक चालक के पद स्वीकृत हैं लेकिन तैनात मात्र 100 चालक तथा 29 सहायक चालक ही हैं। यह 258 की जगह 129 वरकर ही रखना है कि 16 से 20 घण्टे ड्युटी रुटीन बन गई है। और, वर्तमान व्यवस्था की भाषा में रुटीन को एक्सीडेन्ट कहते हैं। (जानकारी 5.1.02 के दैनिक भास्कर से ली है।)

भँवरजाल के तर्क

व्हर्लपूल मजदूर : " बहुत प्रतियोगिता है, मण्डी में मारामारी है। फ्रिज बिक नहीं रहे। ढाई लाख फ्रिज से कम्पनी के गोदाम भर गये हैं। तीन सौ मजूदर फालतू हैं। तीन महीने फैक्ट्री बन्द करेंगे ...... यह सब कहते- कहते कम्पनी ने उत्पादन में भारी वृद्धि वाला तीन वर्षीय मैनेजमेन्ट- यूनियन समझौता किया है। अब से रविवार को भी फैक्ट्री बन्द नहीं होगी, हफ्ते के सातों दिन चलेगी। प्रतिदिन 2800 फ्रिज की जगह उत्पादन 3600 फ्रिज रोज करना होगा। वर्ष में 2 महीने फैक्ट्री बन्द रहा करेगी जिसमें 12 हमारी छुट्टियाँ भी जायेंगी। बेसिक में 3 साल में 1903 रुपये और भत्तों में 500 रुपये बढाने के संग इनसेन्टिव खत्म करने की बात है। अब तक 2200 फ्रिज से इनसेन्टिव शुरू होता था और 2800 के उत्पादन पर 950 रुपये हो जाता था, वह खत्म कर दिया है। एल टी ए के लिये 240 हाजरी वाली शर्त समाप्त कर दी है पर यह भी मजाक है। दरअसल वर्ष में 2 महीने फैक्ट्री बन्द रखने की बात कर रही कम्पनी संग ही संग वर्ष में 7 लाख फ्रिज के उत्पादन की माँग कर रही है। महीने के तीसों दिन और 3600 फ्रिज प्रतिदिन के हिसाब से 7 महीने से कम समय में ही 7 लाख फ्रिज का उत्पादन हो जायेगा। फिर? तीन साल तो बहुत दूर हैं, नूरा कुश्ती में दर्शक बने रहे तो साल- भर में ही हमें लेने के देने पड़ जायेंगे।" ■

नेता की मार

भारत मशीन टूल्स मजदूर : " कम्पनी के चेयरमैन- एम डी नन्द किशोर के पार्षद बनने के बाद उनका दायरा बढ गया है, नये- नये सलाहकार उन्हें मिले हैं और हमारी परेशानियाँ बढ गई हैं। जनवरी और जुलाई 2001 में देय महँगाई भत्ते की राशियाँ अभी तक हमारे वेतन में नहीं जोड़ी हैं। मार्च 2001 में देय वर्दी- जूते हमें नहीं दिये हैं। साढे सतरह प्रतिशत बोनस तथा 500 रुपये 15 वर्ष से दिवाली पर दिये जाते थे लेकिन इस बार 15 प्रतिशत बोनस और 200 रुपये ही दिये। कम्पनी के जन्मदिन पर दिये जाते 100 रुपये और मिठाई का डिब्बा भी इस वर्ष नहीं दिये। हाउस रैन्ट वेतन का 15 प्रतिशत है पर इधर न्यूनतम वेतन पूरा करने के लिये 7 मजदूरों के हाउस रैन्ट को 14, 13, 10, 8 प्रतिशत कर दिया है। अदालत की रोक के बावजूद फैक्ट्री से मशीनें उखाड़ कर ले जाई जा रही हैं — 3 बोरिंग मशीन, 1 शेपर मशीन, 1 ड्रिल मशीन और 4 में से 3 जनरेटर ले गये हैं। महीने में अपनी 3 छुट्टी ले लेने पर वरकर की 1 साप्ताहिक छुट्टी कम्पनी खा जाती है। बिना कोई पत्र दिये मजदूर का गेट रोक देते हैं। हाजरी बी एम टी में लगाते हैं और काम अन्य फैक्ट्रियों में करवाते हैं। ओवर टाइम कागजों में दिखाते ही नहीं और पेमेन्ट सिंगल रेट से करते हैं। किराये की शेड में शुरू हुई कम्पनी के अपने 3 प्लॉट हैं आज लेकिन 20- 25 वर्ष से कम्पनी में काम कर रहे वरकरों की तनखा मात्र 2200 रुपये है और वह भी हाउस रैन्ट जोड़ने पर। श्रम विभाग और कम्पनी इस कदर घी- शक्कर हैं कि दो साल तक 'समझौता हो गया', 'समझौता हो गया' कहते रहे और फँस गये तो कहने लगे हैं कि समझौता नहीं हुआ है।" ■

मन्थन

★ **बाटा कम्पनी** ने कर्नाटक में पीनिया स्थित फैक्ट्री में मजदूरों पर अपनी शर्तें थोपने के लिये 1.10.2001 को तालाबन्दी की और वहाँ का उत्पादन बाटा कम्पनी की अन्य फैक्ट्रियों में करवाया। तीन महीने की तालाबन्दी द्वारा मजदूरों को दबा कर जनवरी में लॉकआउट वापस लिया। बाटा की फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री के अधिकतर मजदूरों को पीनिया फैक्ट्री में तालाबन्दी के दौरान उसका पता नहीं था। तीन साल पहले बाटा कम्पनी ने फरीदाबाद फैक्ट्री में 8 महीने तालाबन्दी करके मजदूरों पर अपनी शर्तें थोपी थी। इसी प्रकार 1988 में बाटानगर स्थित फैक्ट्री में 4 महीने तालाबन्दी करके कम्पनी ने मजदूरों को दबाया था। एक जगह तालाबन्दी और दूसरी जगह ओवर टाइम करवा कर, मजदूरों को मजदूरों के खिलाफ इस्तेमाल कर, बारी- बारी से हमला कर सब मजदूरों को दबाने का कार्य करती कम्पनियों का यह एक उदाहरण मात्र है।

★ सैक्टर–6 स्थित **टालब्रोस इंजिनियरिंग** के मजदूरों की हड़ताल को 100 दिन से ऊपर हो गये हैं। टालब्रोस ग्रुप की यहाँ मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री तथा हथीन स्थित फैक्ट्री में उत्पादन सामान्य रूप से जारी है।

★ **एस्कोर्ट्स रेलवे इक्विपमेन्ट डिविजन** में 23 नवम्बर से हड़ताल चल रही है। बगल के एस्कोर्ट्स सी एच डी प्लान्ट तथा एस्कोर्ट्स के अन्य प्लान्टों में उत्पादन धकाधक जारी है। इधर एस्कोर्ट्स यूनियन के चुनावों ने आर ई डी मजदूरों को फुटबाल में बदल दिया है।

★ डेढ महीने तक **कटलर हैमर**, **टालब्रोस** और **एस्कोर्ट्स रेलवे डिविजन** में संग- संग हड़ताल रही पर इन फैक्ट्रियों के **मजदूरों** के बीच भी चर्चायें और तालमेल वाले कदम नजर नहीं आये। नेताओं के बीच चर्चाओं का हमें पता नहीं — तीनों फैक्ट्रियों में एक ही झण्डा और नेतृत्व रहा है।

★ **कटलर हैमर** मजदूरों को दो महीने बाहर बैठे हो गये तो फँस जाने का अहसास हुआ और बिना समझौते फैक्ट्री में काम करने चले गये। इससे पहले भी टेकमसेह में तालाबन्दी से चौकन्ने हो कर कटलर हैमर वरकरों ने मैनेजमेन्ट का एक जाल काटा था! इस बार भी कटलर हैमर मजदूर हारे नहीं हैं बल्कि उन्होंने स्वयं को ज्यादा फँसने से बचा लिया है। आवश्यकता इस पर मन्थन करने की है कि परेशान कर- कर के मैनेजमेन्टें हमें आमने- सामने, आर- पार वाले जिस अखाड़े में धकेल कर दबाती हैं उसकी काट मजदूर कैसे करें।

कम्पनियाँ अपनी अलग- अलग फैक्ट्रियों के बीच तालमेल रखती हैं। हालाँकि कम्पनियों के बीच होड़ होती है फिर भी कॅम्पनियाँ आपस में तालमेल रखती हैं। और, मन्त्री- अधिकारी- मैनेजमेन्ट की तिकड़ी मजदूरों के खिलाफ हर क्षेत्र में मौजूद है — श्रम विभाग, पुलिस, प्रशासन से तो हमारा वास्ता ही ज्यादा पड़ता है।

जगजाहिर है कि मन्त्री, अफसर, जज मजदूरों की सुनते ही नहीं। क्या है मजदूरों के पास? अपने जैसे अन्य मजदूर! इस हकीकत को जितनी जल्दी हम स्वीकार करेंगे उतनी ही शीघ्रता से हम अपने लिये राहें खोलेंगे और मन्त्री- अधिकारी- मैनेजमेन्ट की तिकड़ी की राहें बन्द करेंगे। तालाबन्दी- हड़ताल थोप दिये जाने की स्थिति में फैक्ट्री गेट से 50- 100 गज दूर बैठ कर ताश खेलने और थक- हार जाने के उदाहरणों की कमी नहीं है। हाँ, **हमले के शिकार मजदूरों द्वारा आस-पास की फैक्ट्रियों के मजदूरों के साथ तालमेलों का इन्तजार है।** जिक्र कर दें, नेताओं वाले तालमेल की हम चर्चा नहीं कर रहे। ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।